चतुर्थ अध्याय

'महाभोज' उपन्यास में आर्थिक समस्याएँ —

आर्थिक समस्या --

अर्थ शास्त्रतों ने आर्थिक दृष्टिकोण से समाज का विभाजन तीन श्रेणियों अथवा वर्गों में किया है ---

१) निम्नवर्ग ।

२) मध्यवर्ग ।

३) उच्चवर्ग ।

मार्क्स् ने ` वर्ग ` का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया है -ऐसे व्यक्तियों का समूह जिनका आर्थिक स्वार्थ एक्सा हो, जिनके कमाने के, धन पैदा करने के लिए एक से ही रास्ते हो और समाज में जिनको समान आर्थिक और सामाजिक स्थान प्राप्त हो । आर्थिक दृष्टि से इन तीनों वर्गों के लोगों के जीवन का स्तर एक दूसरे से बिलकुल भिन्न रहता है ।

(१) निम्नवर्ग --

निम्नवर्ग के लोगों का जीवन अत्यन्त दयनीय रहता है । न उन्हें पेटभर खाना मिलता है, न शरीर ढँकने को पर्याप्त वस्त्र और न धूप वर्षा से बचने लायक कोई घर, नंगे भूखे रहकर वे किसी टूटी फूटी झोंपडी में या उसके भी अभाव में किसी रास्ते के किनारे वृक्ष की छाया में अपना जीवन व्यतीत करते हैं । मानव शरीर धारण करने से मात्र उन्हें मानव की संज्ञा प्राप्त होती है । अन्यथा उनका जीवन पशु-पक्षियों के जीवन से भी गया-बीता होता है । किसान ,मजदूर तथा शारीरिक श्रम करने वाले अन्य लोग इस वर्ग में आते हैं ।

(२) मध्यवर्ग --

मध्यवर्ग की स्थिति निम्नवर्ग की अपेक्षा अच्छी होने पर भी पूर्णतया समाधानकारक नहीं मानी जा सकती । सुशिक्षित होने की सुविधा उनको अवश्य प्राप्त है । परंतु सुशिक्षित होने पर भी आर्थिक कठिनाइयों से मुक्ति नहीं मिलती

सुशिक्षित बेकारों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। परिवार में कमाने वाला एक और खाने वाले अनेक होने से साधारणतया मध्यवर्गीय लोग अभावों से पीड़ित रहते हैं। सुशिक्षित और सुसंस्कृत होने से उनकी अपनी आशा-आकांक्षाएँ रहती हैं। अपने सपने रहते हैं। अपने जीवन मूल्य रहते हैं। परंतु बेकारी, अपर्याप्त वेतन आदि के कारण आर्थिक सुविधायें इतनी नहीं होती कि इनके सपने साकार हो जाएँ। इसलिए यह अनुभव होता है, कि मध्यवर्गीय लोगों में घुटन, संत्रास मानसिक विकृतियों का प्राबल्य आदि का बोलबाला अधिक होता है।

(३) उच्चवर्ग --

उच्चवर्गीय लोगों के लिए धन का अभाव नहीं रहता। रहने के लिए बड़ी-बड़ी हवेलियाँ, पहनने के लिए मुलायम रेशमी वस्त्र और खाने के लिए मेवा मिठाई पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध होती हैं। मोटर गाड़ी, नौकर चाकर, आदि की चमक-दमक अलग रहती है। इस वर्ग में राजा-महाराजा या उनके समकक्ष अधिकारी, साहूकार, जमीनदार, बड़े-बड़े व्यापारी, मिल मालिक जैसे लोगों का समावेश होता है। ये लोग साधारणतया क्षुद्र परिश्रम नहीं करते। निम्नवर्ग के लोग इनके लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक करते रहते हैं। और ये लोग बैठे-बैठे उनके परिश्रम के बल पर लाखों रुपये कमाते हैं और ऐशोआराम का जीवन व्यतीत करते रहते हैं। ये लोग नाच मुजरे, तमाशे, क्लबों पर पानी की तरह पैसा खर्च करते हैं। इन लोगों की धारणा होती है कि दुनिया में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो धन से खरीदी नही जा सकती हो, ये धन को ही जीवन का साध्य समझते हैं जब कि धन जीवन को सुखी बनाने का एक साधन मात्र है। ये लोग धनवान होने के कारण अपने ही घमंड में चूर रहकर अपने सामने दूसरे किसी को कुछ समझते ही नहीं। निम्नवर्ग के प्रति इनका व्यवहार अत्यंत कठोरता, निर्दयता तथा अवहेलना से परिपूर्ण रहता है। निम्नवर्ग के लोगों का हर तरह से शोषण करने की प्रवृत्ति का प्राबल्य होने के कारण इनका अपना एक अलग शोषक-वर्ग निर्माण हो गया है। शोषक-वर्ग में शोषितों के प्रति न सहानुभूति होती है न शोषितों में शोषकों के

प्रति आदर या श्रद्धा की भावना । मानव मात्र को समान समझने की भावना अब भी इन लोगों में विशेष परिमाण में दिखाई नहीं देती ।

समाज में जितनी भी समस्याएँ उत्पन्न होती है उसके पीछे प्राय: आर्थिक समस्या होती है ।

राजनीति में नेता लोग भी लोगों की आर्थिक मजबूरी का फायदा उठाते हैं । अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए लोगों को पैसों का लालच दिखाकर उनसे फायदा उठाते हैं । गरीब,मजदूर अपनी आर्थिक समस्या के कारण मजबूर होकर पैसे लेते हैं और वोट देते हैं । नेता लोगों के पास पैसे की कोई कमी नहीं है । चुनाव जीतने के लिए वे बडी-बडी रैलियाँ निकालते हैं और पैसा पानी की तरह बहाते हैं । उन्हें पैसे की कोई चिन्ता नहीं है इसका उदाहरण मन्नूजी ने अपने महाभोज उपन्यास में दिया है ।

" अब एक ऐसी रैली करवा दो जैसी इस प्रान्त के इतिहास में न हुई हो । देखते रह जायें दा साहब भी । पैसा पानी की तरह भी बहाना पडे तो कोई चिन्ता नही ।" [१]

इन अमीर लोगों को पैसे की कोई चिन्ता नहीं लेकिन गरीब,मजदूर लोगों को दो वक्त पेटभर खाना मिलेगा या नहीं इसकी चिन्ता लगी हुई है । इसी पैसे की समस्या के कारण मनुष्य मजबूर होकर कभी-कभी अपना व्यक्तिगत स्वार्थ-य भी बेच देता है । मन्नूजी के महाभोज उपन्यास में इसका उदाहरण प्रस्तुत है --

" दो समय का खाना और पाँच रुपया प्रति व्यक्ति तय हुआ है । बच्चों के लिए भी दो-दो रुपये दिये जायेंगे । लोगों का क्या है,मजदूरी नहीं की और मौज कर ली पूरे कुनबे बच्चों के पैसे और खाना मुफ्त ।" [२]

---

१ मण्डारी मन्नू - महोभाज - पृ.९१ ।

२ तदैव ,, पृ.१४६ ।

` महाभोज ` उपन्यास में गरीब,मजदूरों की आर्थिक समस्या कितनी भयानक है यह यहाँ दिखाई देता है । सामान्य आदमी की आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण उनके वोटों की कीमत को पाँच रूपये पर उतार दिया जाता है ।

महाभोज उपन्यास में निम्न-वर्ग और उच्च-वर्ग इन दो वर्गों के बिच कितना बडा फासला है यह दिखाई देता है । एक तरफ टूटी-फूटी झोपडियों में रहने वाले हरिजन,मजदूर,गरीब लोग तो दूसरी तरफ महलों में ऐशोआराम के साथ रहने वाले दा साहब, जोरावर,सुकुल बाबू,डि.आई.जी.सिन्हा जैसे अमीर लोग । एक तरफ पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है तो दूसरी तरफ पसीना । अमीर लोग गाडियों में घुमते हैं तो गरीब किसान, मजदूर नंगे पैर । इसी आर्थिक समस्या के कारण ही उच्च-वर्ग निम्नवर्ग पर अत्याचार कर रहा है और निम्नवर्ग बरसों से इनके अन्याय और अत्याचार सह रहा है । निम्न-वर्ग अपना पेट पालने के लिए रात-दिन पसीना बहा रहा है । और इन लोगों का शोषण करके इनकी ही कमाई पर अमीर लोग महाभोज उडा रहे हैं ।

मन्नू भण्डारी ने ग्राम जीवन को निकट से देखा परखा है । वहाँ के कृषक मजदूरों की दयनीय स्थिति को भी निरखा परखा है । उनकी आर्थिक स्थिति को भी समझा है और इस संदर्भ में अपने विचारों की अभिव्यक्ति भी दी है । ` महाभोज ` उपन्यास में निम्न वर्ग की जो आर्थिक समस्या दिखाई देती है उसने भयानक रूप धारण किया है । उच्चवर्ग निम्नवर्ग का शोषण कर रहा है । शोषित और शोषक ये दो वर्ग बने हुए हैं । ये एक ऐसी जंजीर है जो निम्न वर्ग को कभी भी छोडने को तैयार नहीं है ।

निष्कर्ष --

आज पूँजीवादी व्यवस्था की विकृतियों में जन साधारण का जीवन व्यतीत हो रहा है । पूँजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग पर अत्याचार कर रहा है क्योंकि यह पूँजीपति वर्ग सरकारी तन्त्र पर भी अपना प्रभुत्व जमाए हुए है । सर्वहारा वर्ग उससे किसी भी रूप में बढ नहीं सकता ।

मन्नू भण्डारी ने ग्राम जीवन को निकट से देखा है। वहाँ के मजदूरों की दयनीय स्थिति को भी निरखा परखा है। उनकी आर्थिक स्थिति को भी समझा है और इस संदर्भ में अपने विचारों की अभिव्यक्ति भी की है। अत: स्पष्ट है कि महाभोज उपन्यास में ग्राम जीवन की आर्थिक समस्याओं का अंकन भी किया गया है। लेकिन प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं का अंकन करने के उद्देश्य से नहीं लिखा है, फलस्वरूप जहाँ भी आर्थिक विषमता का अंकन करना आवश्यक था वहाँ मन्नूजी ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से सफलतापूर्वक आर्थिक समस्या का अंकन किया है।